Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

भुंजिया जनजाति की शैक्षणिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन (गरियाबन्द तहसील के विशेष संदर्भ में)

Mr. Safakkat Ali[1]* Dr. Sanjay Chandrakar[2]

[1] Research Scholar, Sociology & Social Work Study School, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh

[2] Assistant Professor, Department of Sociology, Govt. J. Yoganandam Chhattisgarh College, Raipur, Chhattisgarh

सारांश:- भारतीय समाज विविधताओं से परिपूर्ण है, विभिन्न संस्कृतियों से मिलकर इस विषाल राष्ट्र का निर्माण हुआ है, जहां अनेकों प्रकार के जाति एवं जनजाति के लोग निवासरत् है। इन्हीं जनजातियों में से एक विशेष पिछड़ी जनजाति है भुंजिया। यह जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के अंतर्गत सिर्फ गरियाबन्द जिले में ही निवासरत् है, जिसकी जनसंख्या गरियाबन्द जिलें में कुल 7199 है। भुंजिया जनजाति की शैक्षणिक स्थिति के सुधार हेतु सरकार नित-नये प्रयास कर रही है जिसके परिणाम स्वरुप इस पिछड़ी जनजाति के शिक्षा के स्तर में काफी सुधार दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन में इस जनजाति के शिक्षा के स्तर को जानने का प्रयास किया जाएगा।

--------------------------------- X ---------------------------------

प्रस्तावना:-

भारतीय समाज विविधताओं से परिपूर्ण समाज है जो कि विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में बंटा हुआ है। ये क्षेत्र अपनी विशेषताओं के कारण अलग पहचान रखते हैं। सामान्यतया इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के रहन-सहन, कला, भाषा, साहित्य इत्यादि में भिन्नता पाई जाती है इन भिन्नताओं के आधार पर हम भारत की जनता को तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं। प्रथम वर्ग में वे लोग आते हैं जो सुविधाओं से परिपूर्ण है और शीर्ष स्थान पर है। द्वितीय वर्ग में वे लोग हैं जो सुविधाओं से परिपूर्ण न होते हुए भी अपने अधिकारों को पाने में सक्षम हैं। तीसरा वर्ग वह जो कि समाज में सबसे निम्न स्थिति में होते हुए भी मूलभूत सुविधाओं के अभाव में जीवन व्यतीत कर रहा है। इस तीसरे वर्ग में एक विशिष्ट वर्ग है आदिवासी समाज। यह समाज हमारे संपूर्ण समाज का सबसे पिछड़ा हिस्सा माना जाता है। यह समुदाय दुर्गम, बीहड़ क्षेत्रों आधुनिक सभ्यता के लाभों से वंचित, आधुनिक कृषि एवं उद्योग-धंधों से अनभिज्ञ अपनी एक अलग ही प्रकार की संस्कृति में निवासरत है। पहाड़ी धरातल, अविकसित कृषि जनजातीय समाज की प्रमुख विशेषता रही हैं। यह जनजातियां भारतीय समाज की विविध कड़ी में से एक महत्वपूर्ण कड़ी मानी जाती है।[1] इन्हीं आदिवासियों में से एक है, छ.ग. की भुंजियां जनजाति, रसेल हीरालाल ने अपने अध्ययन में बताया है कि यह जनजाति संपूर्ण छ.ग. में सिर्फ गरियाबंद जिलें में ही निवासरत् है[2] जिसकी जनसंख्या इस जिलें में कुल 7199 है।[3] अत्यंत कम जनसंख्या होने के कारण विशेष पिछड़ी जनजाति का दर्जा प्राप्त है यह अपनी अलग विविधता के कारण एक विशिष्ट पहचान रखती है।

व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में शिक्षा की अपनी विशिष्ट भूमिका होती है। जनजातीय समाज साक्षरता व आधुनिक शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ा हुआ समाज है। टी.बी. बाटोमोर के अनुसार[4] ''शिक्षा आवश्यक रूप से नई पीढ़ी के समाजीकरण का कार्य करती है लेकिन सामाजिक समूहों और संस्थाओं के अनुसार यह स्वंय विविध स्वरूपों से स्पष्ट होती है''। शिक्षा मानव विकास की आधारशिला है। आज भारत औद्योगिक प्रगति करने के बाद भी विकसित राष्ट्रों की तुलना में अत्यंत पिछड़ा हुआ है तो, इसका एक महत्वपूर्ण कारण भारत की जनसंख्या का एक बड़ा भाग आज भी अशिक्षित है तथा गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन कर रहा है। जनजातीय क्षेत्रों में भी की अन्य सामाजिक आर्थिक पक्षों की भांति शिक्षा की कमी भी एक महत्वपूर्ण समस्या रही है, फलस्वरुप जनजातियों की साक्षरता दर का प्रतिशत देश में बहुत ही कम पाया गया है, दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले

www.ignited.in

जनजातियों में शिक्षा की स्थिति तो और भी संतोषजनक नहीं कही जा सकती है।

भुंजिया जनजाति का परिचय

छ.ग. जनजातीय बहुल प्रदेश माना जाता है। यहां प्रदेश की 30 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या जनजातियों की है,[5] जबकि यह प्रदेश आर्थिक-सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा माना जाता है। जनजातीय दृष्टि से भी देखा जाये तो इनकी आर्थिक - सामाजिक स्थिति दृढ़ नहीं है। छ.ग. में लगभग 40 जनजातियां एवं उपसमूह विभिन्न भागों में निवास करती है। प्रदेश में इनका वितरण असमान है। प्रत्येक जनजाति की अपनी प्रजाति, भाषा, सामाजिक-सांस्कृतिक तथा आर्थिक विशेषताएं हैं। भुंजिया जनजाति द्रविड़ियन प्रजाति का एक छोटा समूह है यह द्रविड़ियन प्रजाति मुख्यतः मध्य भारत में निवास करती है। भुंजिया जनजाति एक अल्पतम जनजाति है, भुंजिया का शब्दिक अर्थ होता है भूंजकर खाने वाला। प्राचीन काल में अकाल या समयाभाव की स्थिति के फलस्वरूप इन विशिष्ट जनजाति द्वारा भोजन को भूंजकर खाये जाने के कारण इनका नाम भुंजिया पड़ा।[6] इनकी उत्पत्ति गोंडों से हुई है। भुंजिया तीन प्रकार के होते हैं, खल्लारी, चिण्डा, चैखुटिया। गोंडों की तरह भुंजिया के गोत्र भी मरकाम, नेताम आदि होते है। इनके घर कच्ची मिट्टी, लकड़ी, खपरों और पेड़ की छाल की रस्सीयों, कोदों पैरे आदि के बने होते है। घरों की छत घास-फूस की होती है। प्रत्येक घर की परछी (बरामदा) में ढेंकी (धान से भूसा अलग करने का यंत्र) अवश्य होती है घर बहुत साफ एवं स्वच्छ होते है।[7]

अध्ययन का समाजशास्त्रीय महत्वः

प्रस्तावित अध्ययन “भुंजिया जनजाति की शैक्षणिक स्थिति“ विषय पर आधारित है प्राचीन काल से ही भारत में जनजातियों का अस्तित्व रहा है इनकी विशेष संस्कृति एवं नैसर्गिक जीवन ने हमें सदैव ही उनकी ओर आकर्षित किया है प्रस्तुत अध्ययन में यह बताने का प्रयास किया गया है कि भुंजिया जनजाति की शैक्षणिक स्थिति में समय एवं परिवेश के बदलाव फलस्वरुप नवीन परिवर्तन हो रहे है। केन्द्र एवं राज्य सरकारों के नित-नवीन योजनाओं की परिणामस्वरुप इस विशेष पिछड़ी जनजाति ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी स्थिति में निरंतर-उत्तरोत्तर सुधार किया है। इस प्रकार यह अध्ययन एक महत्वपूर्ण अध्ययन कहा जावेगा।

अध्ययन का उद्देश्यः

भुंजिया जनजाति की शैक्षणिक स्थिति को ज्ञात करना।

अध्ययन पद्धतिः

प्रस्तुत शोंध अध्ययन में छ.ग. राज्य के गरियाबन्द जिले के गरियाबंद तहसील में निवासरत् भुंजिया ग्रामों का चयन अध्ययन हेतु किया गया है, जहां निवासरत् 596 परिवारों में इनकी कुल जनसंख्या 2843 है जिसमें 1424 पुरुष एवं 1419 महिलाएं है।

ग्राम के चयन हेतु गरियाबन्द तहसील के भुंजिया निवासरत् ग्रामों में दैव-निर्देशन की लाटरी विधि से 4 ग्रामों का चयन किया गया है। जिसमें 2 ग्राम तहसील मुख्यालय से निकट के तथा 2 ग्राम तहसील मुख्यालय से दूर के हैं। निकट के ग्राम में क्रमशः पोटिया लगभग 18 कि.मी और पीपरछेरी लगभग 20 कि.मी तहसील मुख्यालय से दूरी पर है। जबकि दूरस्थ के ग्राम में क्रमशः रायआमा लगभग 36 कि.मी. और बाघमार लगभग 38 कि.मी. तहसील मुख्यालय से दूरी पर है। है। ग्रामों का चयन दैव निर्देशन पद्धति से किया गया है।कुल 116 परिवारों का चयन साक्षात्कार हेतु लाटरी विधि से किया है। जिनमें समस्त चयनित परिवार की शैक्षणिक स्थिति को ज्ञात किया गया है, तथ्य संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसुची का प्रयोग किया गया है।

शैक्षणिक स्थिति

शैक्षणिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन ग्राम के आधार पर

शैक्षणिक स्थिति	निकट का ग्राम	दूरस्थ ग्राम	योग
अशिक्षित	26	48	74
साक्षर (प्रौढ़ शिक्षा)	42	9	51
आंगनबाड़ी	21	15	36
प्राथमिक	111	67	178
मीडिल	63	29	92
हाई–स्कूल	12	16	28
हायर–सेकण्डरी	1	5	6
स्नातक	निरंक	निरंक	निरंक
स्नातकोत्तर	निरंक	1	1
योग	276	190	466(100%)

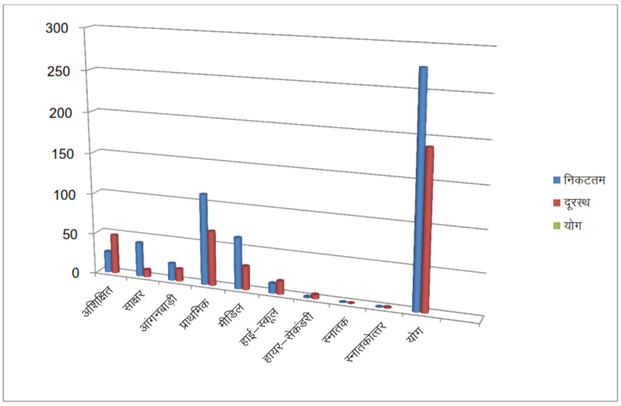

उपरोक्त आकड़ों से स्पष्ट होता है कि समस्त उत्तरदाताओं में से निकट के गांवो में 24% उत्तरदाता प्राथमिक स्तर तक शिक्षित है, जबकि दूरस्थ के ग्रामों में 14.3% उत्तरदाता प्राथमिक स्तर तक शिक्षित है, निकट के गांवो में 13.5% उत्तरदाता मीडिल स्तर तक शिक्षित है, जबकि दूरस्थ के ग्रामों में 6.2% उत्तरदाता मीडिल स्तर तक शिक्षित है, निकट के गांवो में 5.5% अशिक्षित है जबकि दूरस्थ के ग्रामों में 10.3% उत्तरदाता अशिक्षित है, निकट के गांवो में 9% साक्षर है जबकि दूरस्थ के ग्रामों में 2% उत्तरदाता साक्षर; प्रौढ़ शिक्षाद्व है, निकट के गांवो में 4.5% बच्चें आगनबाड़ी जाते है जबकि दूरस्थ के ग्रामों में 3.2% बच्चें आगनबाड़ी जाते हैं,, निकट के गांवो में 2.5% हाई-स्कूल तक शिक्षित है, जबकि दूरस्थ के ग्रामों में 3.43% उत्तरदाता हाई-स्कूल तक शिक्षित है, निकट के गांवो में 0.2% उत्तरदाता हायर सेंकडरी स्तर तक शिक्षित है, जबकि दूरस्थ के ग्रामों में 1% उत्तरदाता हायर सेंकडरी स्तर तक शिक्षित है, निकट के गांवो की तुलना में दूरस्थ के ग्रामों में 0.2% उत्तरदाता स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षित है

निष्कर्ष:-

उपरोक्त अवलोकन पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त होता हैं कि तहसील मुख्यालय से निकट के ग्रामों कि तुलना में दूरस्थ के ग्रामों में शैक्षणिक स्थिति का का स्तर अधिक निम्न हैं। जहां निकट के ग्राम में सर्वाधिक शिक्षित लोगों में प्राथमिक स्तर के है। तत्पश्चात मिडिल स्तर के लोग शिक्षित है इसके साथ-साथ आंगनबाड़ी में भी बच्चे निकट के ग्रामों में अधिक जाते है साक्षर; प्रौढ़ शिक्षाद्व लोगो का भी प्रतिशत निकट के ग्राम में अधिक है, जबकि दूरस्थ के ग्राम में अशिक्षित लोगों का प्रतिशत अधिक है। शासन के द्वारा विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक योजनाओं के द्वारा नित-नये प्रयास किये जा रहें है परंतु आज भी दूरस्थ के क्षेत्रों में इन योजनाओं का सही प्रकार से क्रियान्वयन न होने के कारण उस क्षेत्रों में शैक्षणिक स्तर में कोई विशेष वृद्धि दिखाई नहीं दे रही है। कुछ क्षेत्रों में आवागमन के उचित साधन नहीं है बारिश के समय आवागमन तो पूरी तरह ठप्प हो जाता है जिससे मुख्य मार्ग से उस ग्राम का संपर्क पूरी तरह से टूट जाता है। जिसका असर शिक्षा में भी पड़ता है। शिक्षा के प्रति जागरुकता में वर्तमान में भी कमी दिखाई पड़ती है। अतएव इस क्षेत्र में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

सुझाव:-

- जनजतीयों की शैक्षणिक स्थिति में सुधार के साथ-साथ उनके द्वारा शाला त्यागने के कारणों का समाधान किया जाना भी आवश्यक है, उस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।
- शिक्षा संबंधी विभिन्न समस्याओं पर शासन व समाज के समक्ष ध्यान आकर्षित कर समस्याओं के निवारण में सही दिशा में योजनाबद्व तरीके से योजनाओं को लागू करने की आवश्यकता है।
- शिक्षा संबंधी अवरोधों का अध्ययन कर उनमें शिक्षा के प्रति विकास की दिशा का निर्धारण किया जाना चाहिए।
- इन क्षेत्रो में शैक्षणिक संस्थाओं में वृद्धि किये जाने से सार्थक परिणाम प्राप्त किये जा सकते है।
- स्किल डेवलपमेंट जैसे प्रोग्राम किये जाने चाहिए जो कि जनजातियों की आय में वृद्धि कर सकें ।
- स्थानीय भाषा एवं बोली से शिक्षा की व्यवस्था की जावे।
- बहारी दुनिया के संपर्क में लाने के लिए विद्यार्थियों को ज्यादा से ज्यादा शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाया जाना चाहिए।
- शिक्षा के प्रति जागरुकता की वर्तमान में भी कमी दिखाई देती है उसे दूर करने की आवश्यकता है।
- अत्यधिक पिछड़े इलाकों में आवागमन हेतु सडक़ों के निर्माण की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1 राजपूत, उदयसिंह; आदिवासी विकास एवं गैर-सरकारी संगठन, रावत पब्लिकेशन्स 2010 नई दिल्ली। पृ.क्र. xi, xii

2 https://gariaband.gov.in/विभाग/आदिवासी-विकास

3 सोनवानी, तुलसिंह आधुनिकीकरण एवं भुंजिया जनजाति - निरंतरता एवं परिवर्तन का अध्ययन पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर छ.ग. 2010, पृ.क्र. 8

4 बाटोमोर, टी.बी., सोशियोलॉजी, लंदन, जार्ज एलेन, 1948, पृ. 275

5 Tribal.cg.gov.in

6 राजपूत, उदयसिंह; आदिवासी विकास एवं गैर-सरकारी संगठन, रावत पब्लिकेशन्स 2010 नई दिल्ली। पृ.क्र. गप

7 तिवारी, विजय कुमार छत्तीसगढ की जनजातियाँ हिमालया पब्लिशिंग हाउस 2001 पृ. क्र. 44

8 Basu, S.K. (1993). Health Status of Tribal Women in India, Social change pp

9 Das, C.R. (2004). Tribal Women in Changing Environment, Tribal Women in India, Dominant Publishers and Distributers, New Delhi, Edited book By SN Tripathy

10 Devi, A Sailja 2004, Socio-Economics Condition of Tribal Women: A Study in Andhra Pradesh, Tribal Women in India, Dominant Publishers and Distributers, New Delhi, Edited book By SN Tripathy.

11 Behra S. & Mohanti R. (2004). Forest and Livelihood for Tribal Women, Tribal Women in India, Dominant Publishers and Distributers, New Delhi, Edited book By SN Tripathy.

Corresponding Author

Mr. Safakkat Ali*

Research Scholar, Sociology & Social Work Study School, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh

safakkatali@gmail.com

www.ignited.in